كنوز الصلاة - هندي

नमाज़ के ख़ज़ाने

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

235

هاتف: ٤٢٢٤٤٦٦ ٠١٦ - فاكس: ٤٢٢٤٤٧٧ ٠١٦

جمعية الدعوة بالزلفي

كنوز الصلاة - هندي

नमाज़ के ख़ज़ाने

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات في الزلفي
Tel: 966 164234466 - Fax: 966 164234477

كنوز الصلاة

أعده وترجمه إلى اللغة الهندية

جمعية الدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

الطبعة الثانية : ٨ / ١٤٤٢ هـ

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر
المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

كنوز الصلاة - الزلفي، ١٤٤١هـ

٥٢ ص ؛ ١٢×١٧ .سم

ردمك: ٧-٢٣-٨٢٤٣-٦٠٣-٩٧٨

١- الصلاة أ- العنوان

ديوى ٢٥٢,٢ ٢٢٩/ ١٤٤١

رقم الإيداع: ٢٢٩/ ١٤٤١

ردمك: ٧-٢٣-٨٢٤٣-٦٠٣-٩٧٨

كنوز الصلاة - الهندية

नमाज़ के खज़ाने

वुजूः वुजू की बहुतसारी और अज़ीम फजीलतें हैं जिन में से चन्द ये हैं:

वुजू करने से अल्लाह तआला की मुहब्बत हासिल होती है अल्लाह तआला का इर्शाद है: إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ:

अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा तौबा करने वालों और बहुत ज़्यादा पाक रहने वालों को पसन्द करता है। (अलबकरा-२२२)

वुजू करने से गुनाह मिटते और दरजात में बढ़ोतरी होती है

فعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: ((إِذَا تَوضأَ العبدُ المُسلمُ - أو المؤمن - فَغَسَلَ وجْهَهُ، خَرج من وجههِ كُل خَطيئة نَظَر إليها بعينيهِ مَع الماءِ - أو مَع آخر قَطر الماء - فَإذا غَسَلَ يَديه خَرجَ من يديهِ كُل خَطيئة كَان بَطشتها يَداهُ مَعَ الماءِ - أو مع آخر قطر الماء - فَإذا غَسَلَ رَجليهِ خَرجت كُل خَطيئة مَشتها رِجْلاهُ مَع الماء - أَو معَ آخرِ قَطر الماءِ - حَتَّى يَخرج نقيًّا منَ الذُنوب)) ﴿ رواه مسلم: ٥٧٧ ﴾

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब जब मुसलमान या मोमिन बन्दा वुजू करता है और अपना मुंह धोता है तो उसके मुंह से वह सब छोटे गुनाह पानी के साथ

या पानी की आखिरी बून्द के साथ निकल जाते हैं जो उसने अपनी दोनों आंखों से देखने के ज़रिये किया था और जब वह अपने दोनों हाथ धोता है तो उसके हाथ से सारे गुनाह पानी के साथ या पानी की आखिरी बून्द के साथ निकल जाते हैं जो उसने हाथों से पकड़ कर किया था और जब वह अपने दोनों पैर धोता है तो पानी के साथ या पानी की आखिरी बून्द के साथ वह तमाम गुनाह निकल जाते हैं जिस की तरफ चलकर उसके पैरों ने किया था यहां तक कि वह गुनाहों से पाक और साफ हो जाता है। (मुस्लिम ५७७)

وعَنْه - رضي الله عنه - قَالَ: قال رَسُوْلِ الله ﷺ: ((ألا أدُلكم على مَا يمحو الله به الخطايا ويرفعُ به الدرجات؟)) قَالُوا: بلى يا رسول الله، قَالَ: ((إسباغ الوضوءِ على المكَاره، وكثرةُ الخطا إلى المساجدِ، وانتظارُ الصلاةِ بعد الصلاة، فذلكم الرباط)) [رواه مسلم: 587].

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु ही ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या तुम्हें ऐसा अमल न बताऊं जिस के ज़रिया से अल्लाह तआला तुम्हारी खताएं मिटा देता है और दरजे बुलन्द कर देता है सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम ने कहा क्यों नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपने फरमाया मुशकिल और नागवारी के बावजूद कामिल वुजू करना और मस्जिदों की तरफ जियादा कदम चलना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तेजार करना तो यही रिबात है (मुस्लिम ५८७)

मकारेह (नागवारी) यानी सख्त ठडक या बीमारी वगैरह

و عن عثمان بن عفان ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ : ((من توضأ فأحسنَ الوضوءَ خرجت خطاياهُ من جسده، حتى تخرج من تحت أظفاره)) [رواه مسلم: 578].

हज़रत उसमान बिन अफ्फान रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स वुजू करे और खूब अच्छी तरह वुजू करे तो उसके जिस्म से उसके गुनाह निकलते हैं यहां तक कि उसके नाखूनो के नीचे से भी निकलते है। (मुस्लिम ५७८)

वुजू के बाद की दुआ (जिक्र)। वुजू के बाद दुआ (जिक्र) करने की बड़ी फज़ीलत है इसलिए मुसलमानो इसका एहतेमाम करना और उसको छोड़ मत देना वुजू के बाद जिक्र करने वालों के लिए सादिको मसदूक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह बशारत है।

عن عمر بن الخطاب ـ ﷺ ـ قال: قال رسول الله ﷺ: ((مَا مِنكم مِن أحَد يتوضأ فيُسبغ الوضوءَ ثم يقولُ : أشهدُ أن لا إلهَ إلا اللهُ ، وأنَّ محمدًا عبدهُ ورسولهُ إلَّا فُتحت له أبوابُ الجنةِ الثمانيةِ ، يدخلُ مِن أيِّها شاءَ)) [رواه مسلم: 553].

उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम मं से जो कोई अच्छी तरह वुजू करता है फिर यह पढ़ता है, अशहदु अल्लाइलाह ईल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुह, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं कि वह जिस दरवाजे से दाखिल होना चाह दाखिल हो जाए। (मुस्लिम ५५३)

मिस्वाक

عن أبي هريرة - ﷺ - قال: قال رسول الله ﷺ : ((لَولا أنْ أشـقَّ عَـلى أُمَّتـي ، لأمرتُهم بالسِّواكِ مَع كُلِ صَلاة)) [متفق عليه: 887- 252] .

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर मेरी अपनी उम्मत के मशक्कत में पड़ने का अनदेशा नहीं होता तो मै उन्हे हर नमाज़ के वक्त मिसवाक करने का हक्म देता। (बुखारी, ८८७ मुस्लिम २५२)

❖ وعن عائشة رضي الله عنها قالت: قال رسولُ الله ﷺ : ((السِّواكُ مَطْهَرَةٌ لِلفَمِ مَرْضَاْةٌ لِلرَبِّ)) [رواه النسائي: 5].

आईशा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मिसवाक करना मुंह की सफाई सुथराई और अल्लाह को खुशनूदी के हुसूल का जरिया है। (नसाई ५)

अव्वल वक़्त में नमाज़ के लिए जाना

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुत्अदिदद हदीसों में नमाज़ के लिए अव्वल वक्त में जाने की फज़ीलत और उससे मिलने वाले सवाब के सिलसिले में इशारा किया है।

عن أبي هريرة - رضي الله عنه - قال: قال رسول الله ﷺ: ((لو يَعلمُ النَّاسُ ما في النِّداء والصَّفِ الأولِ، ثُم لم يَجدوا إلا أنْ يَسْتَهموا عليه لاسْتَهموا، ولو يَعلمُونَ ما في التَّهجيرِ لاسْتَبقوا إليه [متفق عليه: 615، 981]

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अजान और पहली सफ का सवाब अगर लोगों को मालूम होता तो वह कुरआ अन्दाज़ी करते और अव्वल वक्त में नमाज़ पढ़ने की फज़ीलत से लोग वाकिफ़ होते तो एक दूसरे पर सबक़त करते। (बुखारी, ६१५ मुस्लिम ६८१)

عن أبي سعيد الخدري رضي الله عنه، أن رسول الله - ﷺ - رأى من أصحابه تأخرًا فقال لهم: ((تَقَدموا فأتموا بي، وليْأتم بكم من بَعدكم، لا يَزالُ قَومٌ يَتأخرونَ حتى يُؤخرهمُ الله)) [رواه مسلم: 982].

अबू सइद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को पिछली सफ में देखकर फरमायाः मेरे करीब आओ पहली सफ पूरी करो फिर दूसरी सफ वाले तुम्हारी पैरवी करें जो लोग पीछे

रहेंगे तो अल्लाह तआला अपनी रहमत में भी पीछे रखेगा।(मुस्लिम ६८२)

नमाज़ के लिए अव्वल वक़्त में जाना इस बात की दलील है कि बन्दे का दिल मस्जिद से लटका हुआ है वह हदीस जिसमं आया है कि सात लोग अल्लाह के अर्श के साये में होंगे उस दिन जब अल्लाह के अर्श के साये के सिवा कोई साया न होगा उन सात लोगों में एक शख्स की सिफात यह बयान हुई है।

ऐसा आदमी जिसका दिल मस्जिदों से लटका हुआ हो। (बुखारी, १४२३ मुस्लिम २३८०)

अज़ान का जवाब

عن عبدالله بن عمرو - رضي الله عنهما - أنه سمع النبي - ﷺ - يقول: ((إذا سَمِعتمُ المؤذنَ فقولوا مِثل مَا يقولُ ، ثُم صَلوا عليَّ ، فإنه من صلى عليَّ صلاة ، صلَّى اللهُ عليهِ بها عشرًا [رواه مسلم: 849].

अब्दुल्लाह बिन अमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि आपने फरमायाः जब तुम मुअज्जिन की अजान सुनो तो तम वही कहो जो मोअज्जिन कहता है फिर मुझ पर दरूद पढो क्योंकि जो कोई मुझ पर एक मरतबा दरूद पढ़ता है तो अल्लाह तआला अपनी दस रहमतें नाज़िल करता है (मुस्लिम ८४६)

عَن عُمرَ بْنِ الخْطابِ ـ رضي الله عنه ـ قالَ: قالَ رَسُولُ الله ﷺ : ((إِذَا قالَ: المؤَذِّنُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ ، فقَالَ أَحَدُكُم: اللهُ أكبرُ اللهُ أكبَرُ ، ثُمَّ قالَ: أشهَدُ أن لا إِلهَ إلا اللهُ ، قَالَ: أَشْهَدُ أنْ لَا إِله إلا اللهُ ، ثُمَّ قَالَ: أَشْهَدُ أنَّ مُحمدًا رَسُولُ الله ، قَالَ: أَشْهَدُ أنَّ مُحمدًا رَسُولُ الله ، ثمَّ قَالَ: حَيَّ على الصَّلاةِ ، قَالَ: لا حَوْلَ وَلا قُوَّةَ إلا بِالله ، ثُمَّ قَالَ: حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ، قَالَ: لا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إلا بِالله ، ثُمَّ قَالَ: اللهُ أَكبرُ اللهُ أَكبرُ ، قَالَ: اللهُ أَكبرُ اللهُ أكبرُ ، ثُمَّ قَالَ: لا إِلهَ إلا اللهُ ، قَالَ: لَا إِلهَ إلا اللهُ مِنْ قَلْبِهِ ؛ دَخَلَ الجنـةَ)) [رواه مسلم: 385] .

उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब मुअज्जिन अल्लाह अकबर कहे तो सुनने वाला भी यही दोहराये और जब अशहदू अल्लाइलाह इल्लल्लाह और अशहदू अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह कहे तो सुनने वाला भी यही अलफाज़ कहे और जब मुअज्जिन हैयाअलस्सलात कहे तो सुनने वाला लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहे और जब मुअज्जिन हैयाअललफलाह कहे तो सुनने वाले को लाहौल वला कुव्वता इल्लबिल्लाह कहना चाहिये इसके बाद जब मुअज्जिन अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ओर लाइलाहा इल्लल्लाह कहे तो सुनने वाले को भी यही अल्फाज़ दुहराना चाहिये और जब सुनने वाले ने इन कलिमात को दिल से यकीन रख कर कहा तो वह जन्नत में दाखिल होगा। (मुस्लिम ३८५)

अज़ान के बाद जिक्र (दुआ)इस इबादत के फवाइद मे स चन्द यह हैः गुनाहों की मगफिरत

عن سعد بن أبي وقاص ﷛ ، عن رسول الله ﷺ ، أنه قال: ((مَن قالَ حِين يَسمع المؤذن: أشهدُ أن لَا إلهَ إلَّا اللهُ وحدهُ لا شَريكَ له ، وأنَّ محمدًا عبدهُ ورسوله ، رَضيتُ بالله ربًّا ، وبمحمدٍ رسولًا ، وبالإسلام دينًا ، غُفر له ذنبه)) [رواه مسلم: 851]

सअद बिन अबी वक्कास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुअज्जिन की आवाज़ सुनकर जिसने यह कहा, *अशहदु अल्लाइलाह ईल्लल्लाहु वहदहु लाशरीक लहु व अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुह, रजीतुबिल्लाहि रब्बा, वबि मुहम्मदिन रसूला, वबिलइस्लामि दीना,* मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई और दूसरा माबूद नहीं है अल्लाह तआला का कोई शरीक नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं मैं अल्लाह की रूबूबियत और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत से राजी व खुश हूं और मैं ने मज़हबे इस्लाम को कुबूल कर लिया है'' तो ऐसे शख्स के गुनाह माफ हो जाते हैं। (मुस्लिम ८५१)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफाअत

عن جابر بن عبدالله رضي الله عنهما ، أن النبي - ﷺ - قال: ((من قَالَ حِينَ يَسمعُ النداء: اللهم ربَّ هذهِ الدعوةِ التَّامةِ والصلاةِ القائمةِ ، آتِ محمدًا الوسيلة والفضيلة ، وابعثهُ مقامًا محمُودًا الذي وعدته ؛ حَلت له شفاعتي يوم القيامة))[رواه البخاري: 614] .

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने मुअज्जिन की अज़ान सुनकर यह दुआ पढ़ा, *अल्लाहुम्म रब्ब हाजिहिद्दा व तित्ताम्मह वस्सलातिल काइमह अति मुहम्मद अलवसीलत वलफजीलत वबअसहु मकामम महमूद अल्लजी वअत्तह,* ए इस मुकम्मल दावत (अज़ान) और कायम रहने वाली नमाज़ के रब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वसीला और बुजरूगी अता कर और उनको मकामे महमूद पर पहुंचा जिसका तूने वादा किया है, तो उस के लिए मेरी शिफाअत खास हो जायेगी। (बुखारी ६१४)

नमाज़ के लिये चल कर जाना

नमाज़ के लिए चलकर जाने से दरजात बुलन्द होते हैं गुनाहों का कफ्फारा हो जाता है और सुबहा शाम जब कभी भी बन्दा मस्जिद में जाता है तो उसके लिए जन्नत मं जियाफत तैयार की जाती है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इससे और ज्यादा की खुशखबरी सुनाई है।

عن أبي هريرة ـ رضي الله عنه ـ قال: قال رسول الله ﷺ: ((من تَطهر في بيته ثُم مشى إلى بيتٍ من بُيوت الله ، ليقضي ـ فَريضةً من فرائض الله ، كانت خطواته إحداهما تَحُطُ خطيئة ، والأخرى ترفع درجة)) [رواه مسلم: 1521] .

हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अपने घर में तहारत करे फिर अल्लाह के किसी घर में जाए और अल्लाह के फराइज़ में से किसी फर्ज़ को अदा करे तो उसके कदम ऐसे होंगे कि एक से तो बुराइया उतरेंगी और दूसरे से दर्जे बुलन्द होंगे। (मुस्लिम १५२१)

وعنه رضي الله عنه ، أن رسول الله ـ ﷺ ـ قال: ((ألا أدُلكم عَلى مَا يَمحو اللهُ بهِ الخطَايا ، ويَرفعُ به الدرجات)) قالوا: بلى يا رسول الله، قال: ((إسباغُ الوضوءِ عَلى المكارهِ ، وكَثرةُ الخُطا إلى المساجدِ ، وانتظارُ الصلاةِ بعدَ الصَّلاة ، فَذَلكم الرِّباطُ...)) [رواه مسلم: 251].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु ही से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या तुम्हें ऐसा अमल न बताऊं जिसके जरिया अल्लाह तआला तुम्हारी खताए मिटा देता है और दर्जे बुलन्द करता है सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम ने कहा क्यों नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, आपने फरमायाः मशक्कत और नागवारी के बावजूद कामिल वुजू करना मस्जिद की तरफ ज़्यादा कदम

चलना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तेज़ार करना, यही तो रिबात है। (मुस्लिम २५१)

وعنه رضي الله عنه ، عن النبي - صلى الله عليه وسلم - قال: ((مَن غَـدا إلى المسْـجدِ أو رَاحَ ، أعـدَ اللهُ له في الجنة نزلًا ، كُلما غَدا أو رَاحَ)) [رواه مسلم: 1524].

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से ही रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स सुबह को या शाम को मस्जिद के लिये गया अल्लाह तआला जन्नत में उसके लिए जियाफत तैयार करता है हर सुबह और शाम में (मुस्लिम १५२४)

नुजूल यानी जियाफत, मेहमानी

सुन्नते मुअक्कदा

सुन्नते मुअककदा की पाबन्दी से अल्लाह तआला की मुहब्बत वाजिब होती है और ऐसे लोगों के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत में घर की बशारत दी है।

فعَن أُم حَبِيبَةَ زَوْجِ النبِيِّ صلى الله عليه وسلم ، أنَّها سمِعْت رسُولَ الله - صلى الله عليه وسلم - يَقُولُ : ((مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّي لله كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً تَطَوُّعًا غَيْرَ فَرِيضَةٍ إِلَّا بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الجَنَّةِ ، أَوْ إِلَّا بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الجَنَّةِ)) [رواه مسلم: 1696].

उम्मे हबीबा रजियल्लाहु अन्हा जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी हैं कहती हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को फरमाते हुये सुना कि कोई भी मुस्लिम बन्दा अल्लाह के लिये हर दिन में फर्ज के इलावा बारह रकअत पढ़े तो अल्लाह तआला उसक लिए जन्नत में एक घर बनायेगा। (मुस्लिम १६९६)

सुन्नते मुअक्कदा यह हैः दो रकअत फज्र से पहले, चार रकअत जुहर से पहले और दो रकअत जुहर के बाद, मगरिब के बाद दो रकअत और इशा के बाद दो रकअत

अजान और इकामत के बीच की दुआ

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ـ رضي الله عنه ـ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((**الدُّعَاءُ لَا يُرَدُّ بَيْنَ الْأَذَانِ وَالْإِقَامَةِ**)) [رواه أبو داود والترمذي:437- 212].

अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अज़ान और इक़ामत के दरमियान की दुआ रद नहीं होती ह। (अबू दाऊद, ४३७ तिर्मिज़ी २१२)

नमाज़ का इन्तेज़ार

क. नमाज़ का इन्तेज़ार करने से नमाज़ पढने के बराबर सवाब हासिल होता है।

فعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ـ ﷺ ـ قَالَ: ((**لَا يَزَالُ أَحَدُكُمْ فِي صَلَاةٍ مَا دَامَتْ الصَّلَاةُ تَحْبِسُهُ...**)) [رواه البخاري ومسلم: 659 - 649].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में का कोई भी शख्स उस वक्त तक नमाज़ में रहता है जब कि नमाज़ उसे रोक हुए रहती है। (बुखारी, ६५६ मुस्लिम ६४६)

ख. फरिश्ते उसके लिए दुआए मगफिरत करते हैं।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ،أَنَّ رَسُولَ اللهِ ـ ﷺ ـ قَالَ: ((**لَا يَزَالُ الْعَبْدُ فِي صَلَاةٍ مَا كَانَ فِي مُصَلَّاهُ يَنْتَظِرُ الصَّـلَاةَ ، وَتَقُولُ الْمَلَائِكَةُ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ، اللَّهُمَّ ارْحَمْهُ حَتَّى يَنْصَرِفَ أَوْ يُحْدِثَ**)) [رواه مسلم : 649].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बन्दा उस वक्त तक नमाज़ में रहता है जब तक वह अपने मुसल्ला पर बैठकर नमाज़ का इन्तेजार करता रहता है और फरिश्ते कहते हैं कि ऐ अल्लाह तआला इसकी मगफिरत फरमा अल्लाह तआला इस पर रहम फरमा यह कैफियत उस वक्त तक रहती है जब तक कि वह नमाज पढ़कर लौट नहीं आता है या जब तक उसे नापाकी लाहिक नहीं हो जाती है। (मुस्लिम ६४६)

ग. गुनाह मिटते और दरजात बुलंद होत हैं।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ـ ﷺ ـ قَالَ: ((**أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى مَا يَمْحُو اللهُ بِهِ الْخَطَايَا وَيَرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتِ**)) قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ:

((إِسْبَاغُ الْوُضُوءِ عَلَى الْمَكَارِهِ وَكَثْرَةُ الْخُطَا إِلَى الْمَسَاجِدِ وَانْتِظَارُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ فَذَلِكُمْ الرِّبَاطُ فَذَلِكُمْ الرِّبَاطُ)) [رواه مسلم : 251].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क्या मैं तुमका ऐसे अमल के बारे में न बताऊं जिससे गुनाह मिट जाएं और दरजे बुलन्द हों सहाबा ने कहा क्यों नहीं या रसूलुल्लाह बताइये आपने फरमाया अच्छी तरह वुजू करना मशक्कत और तकलीफ के बावजूद और मस्जिदों की तरफ ज्यादा चल कर जाना यही रिबात है यही रिबात है। (मुस्लिम २५१)

जिक्र और तिलावते कुरआन में मशगूल रहना

क. तिलावते कुरआन की फज़ीलत

عن عَبْدِ الله بْنِ مَسْعُودٍ ـ رضي الله عنه ـ قَالَ: قَالَ ﷺ : ((مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ الله فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا ، لَا أَقُولُ الم حَرْفٌ ، وَلَكِنْ أَلِفٌ حَرْفٌ ، وَلَامٌ حَرْفٌ ، وَمِيمٌ حَرْفٌ)) [رواه الترمذي 2910].

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अल्लाह की किताब से एक हर्फ पढ़ा तो उसके लिए एक नेकी है और एक नेकी का अज्र दस गुना मिलता है मैं नहीं कहता कि अलिफ लाम-मीम एक हरफ है बल्कि अलिफ एक हरफ है लाम एक हरफ है और मीम एक हरफ है। (तिर्मिज़ी २९१०)

❖ وعن أبي أُمَامَةَ البَاهِلِي - رضي الله عنه - قالَ: سَمعتُ رسولَ الله - صلى الله عليه وسلم - يَقول: ((اقْـرَأوا القُرآنَ فَإنهُ يَأتِي يَومَ القيامةِ شَفيعًا لأَصْحَابِه)) [رواه مسلم: 804].

अबू ओमामा बाहिली रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह कहते हैं कि मैंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमाते हुए सुना कि कुरआन की तिलावत करो इसलिए कि वह अपने कारी (तिलावत करने वाले का) सिफारिशी बनकर क्यामत के दिन आएगा। (मुस्लिम ८०४)

ख. सूरह इख्लास की तिलावत एक तिहाई कुरआन की तिलावत के बराबर है।

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ - رضي الله عنه - قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ - صلى الله عليه وسلم - لِأَصْحَابِهِ: ((أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَقْرَأَ ثُلُثَ الْقُرْآنِ فِي لَيْلَةٍ)) فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ وَقَالُوا: أَيُّنَا يُطِيقُ ذَلِكَ يَا رَسُولَ الله فَقَالَ: ((قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ تَعْدِلُ ثُلُثُ الْقُرْآنِ)) [متفق عليه: 5015 ، 811].

अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या तुम में से कोई हर रात एक तिहाई कुरआन पढ़ने से आजिज है तो यह बात सहाबा पर गिरां गुज़री कि किस तरह एक तिहाई कुरआन एक रात में पढ़ा जा सकता है चुनान्चे सहाबा ने कहा कि या रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा करने की हम में से किसी को भी ताकत नहीं तो आपने फरमाया "कुल हुवल-लाहू अहद" एक तिहाई कुरआन के बराबर है (बुखारी,५०१५ मुस्लिम ८११)

मउव्वजतैन पढ़ने की फज़ीलत

عن عقبة بن عامر - ﷺ - قال: قال رسول الله ﷺ: ((ألم تر آيات أُنزلت الليلة لم يُرَ مِثلُهن قط ؟: ﴿ قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الفَلَقِ ﴾ و ﴿ قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴾)) [رواه مسلم:814]

उकबा बिन आमिर रजियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम नहीं देखते कि आज की रात ऐसी आयतें उतरीं है कि उनके मिस्ल कभी नहीं देखीं और वह कुल अऊजु बिरब्बिल फलक और कुल अऊजु बिरब्बिन्नास हैं। (मुस्लिम ८१४)

ध. सूरह मुल्क अपने तिलावत करने वाले की उस वक्त तक शिफाअत करेगी जब तक कि उसकी मगफिरत ना हो जाए।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ، عَنْ النَّبِيِّ - ﷺ - قَالَ: ((إِنَّ سُورَةً مِنْ الْقُرْآنِ ثَلَاثُونَ آيَةً شَفَعَتْ لِرَجُلٍ حَتَّى غُفِرَ لَهُ ، وَهِيَ سُورَةُ تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ)) [رواه الترمذي: 2891].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कुरआन की एक सूरत जिसकी तिस आयत हैं अपने पढने वाले शख्स की उस वक्त तक सिफारिश करेगो जब तक कि उसकी मगफिरत नहीं हो जाए और वह है सुरह मुल्क । (तिर्मिज़ी २८६१)

जिक्र

१. तस्बीह की फज़ीलत

عن أبي هريرة ﷺ ، أن رسول الله ـ ﷺ ـ قال: ((مَنْ قَالَ : سُبْحَانَ الله وَبِحَمْدِهِ في يَوم مِئَةَ مرَّة حُطَّت عَنه خَطَايَاهُ وإنْ كَانَت مِثْلَ زَبد البحر)) [متفق عليه: 6405 ، 2691]

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने दिन भर में १०० बार सुब्हानल्लाहि व बिहमदिहो पढ़ा तो उसके गुनाह मिट जाते हैं अगरचे वह समुद्र के झाग के बराबर ही क्यों न हों। (बुखारी, ६४०५ मुस्लिम २६९१)

عَنْ مُصْعَب بْنِ سَعْدٍ قال: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ الله ﷺ فَقَالَ: ((.أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَكْسِبَ كُلَّ يَوْم أَلْفَ حَسَنَةٍ، فَسَأَلَهُ سَائِلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ كَيْفَ يَكْسِبُ أَحَدُنَا أَلْفَ حَسَنَةٍ؟ قَالَ: ((.يُسَبِّحُ مِئَةَ تَسْبِيحَةٍ ، فَيُكْتَبُ لَهُ أَلْفُ حَسَنَةٍ ، أَوْ يُحَطُّ عَنْهُ أَلْفُ خَطِيئَةٍ [رواه مسلم: 2689]

मस्अब बिन साद से रिवायत है कि वह कहते हैं कि मेरे बाप ने बयान किया कि वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि आपने फरमाया कि तुम में से किसी के बस में नही है कि वह हर दिन हज़ार नेकियाँ कमाए तो वहां बैठे एक आदमी ने पूछा कि हम में से कोइ किस तरह हज़ार

नेकी कमा सकता है तो आपने फरमाया सौ बार तसबीह पढ़ने से आदमी के लिए हजार नेकियां लिख दो जाती हैं या उसके हजार गुनाह मआफ हो जाते हैं। (मुस्लिम २६८६)

وعن أبي هريرة ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ: ((لأن أقول: سبحان الله، والحمد لله، ولا إله إلا الله ، والله أكبر ، أحب إليَّ مما طلعت عليه الشمس)) [رواه مسلم: 2695].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया सुब्हानल्लाह वल हम्दुलिल्लाह व लाइलाहा इल्लल्लाह वल्लाहू अकबर कहना मेरे लिये उन जीज़ों से ज़्यादा पसन्द है जिन पर सूरज तुलू होता है। (मुस्लिम २६९५)

وعنه ﷺ قال: قال رسول الله ﷺ: ((من قال حين يصبح وحين يمسي: سبحان الله وبحمده ، مئة مرة لم يأتِ أحدٌ يوم القيامة بأفضل مما جاء به، إلا رجلٌ قال مثل ما قال ، أو زاد عليه)) [رواه مسلم: 2692]

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने सुब्हो शाम सुब्हानल्लाहि व बिहमदोहि १०० बार पढ़ा कियामत के दिन उससे ज़्यादा नेकी कोई दूसरा नहीं पायेगा सिवाए उस शख्स के जिसने इस कल्मा को पढ़ा या उससे ज़्यादा पढ़ा। (मुस्लिम २६९२)

وعنه ﷺ ، عن النبي ﷺ قال: ((.كلمتان خفيفتان على اللسان ، ثقيلتان في الميزان ، حبيبتان إلى الرحمن: سبحان الله وبحمده ، سبحان الله العظيم)) [متفق عليه: 6406 ، 2694]

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो कलमे जो जुबान पर बहुत हलके हैं तराजू में बहुत भारी हैं और रहमान को निहायत महबूब हैं वह है सुब्हानल्लाहि व बेहमदिहो सुब्हानल्लाहिल अज़ीम (बुखारी, ६४०६ मुस्लिम २६६४)

عن سَمُرَةَ بن جُندب ـ ﷺ ـ قال: قال رسول الله ﷺ : ((أَحَبُّ الكَلام إلى الله أَرْبعٌ: سُبْحَانَ الله ، والحمدُ لله ، ولا إلهَ إلَّا اللهُ ، واللهُ أكبَر ، لا يَضُرُّكَ بأيِّهِن بَدأتَ)) [رواه مسلم:2137]

समुरा बिन जुन्दुब रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न फरमाया अल्लाह तआला को चार कलम बहुत पसन्द है और वह है सुब्हानल्लाह, वलहम्दुलिल्लाह, व लाइलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहू अकबर, तुम इन में से किसी कल्मे से पढ़ना शुरू कर सकते हो तुम्हारा इससे कोई नुक्सान नहीं होगा। (मुस्लिम २१३७)

२. लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहू लाशरीक लहू लहुल मुलकु व लहुल हम्दु वहुव अला कुल्लि शैइन कदीर पढ़ने की फज़ीलत।

عن أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ،أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ ، وَلَهُ الْحَمْدُ ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ،

فِي يَوْمٍ مِئَةَ مَرَّةٍ كَانَتْ لَهُ عَدْلَ عَشْرِ رِقَابٍ ، وَكُتِبَتْ لَهُ مِئَةُ حَسَنَةٍ ، وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِئَةُ سَيِّئَةٍ ، وَكَانَتْ لَهُ حِرْزًا مِنْ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذَلِكَ حَتَّى يُمْسِيَ ، وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ ، إِلَّا أَحَدٌ عَمِلَ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ)) [رواه البخاري ومسلم: 3293 ، 2691]

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहू लाशरीक लहू लहुल मुलकु व लहुल हम्दु वहुव अला कुल्लि शैइन कदीर एक दिन में सौ मरतबा पढ़ा उसे दस गर्दन आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलता है और उसके लिए सौ नेकियां और उसके सौ गुनाह मआफ हो जाते हैं। और शाम तक शैतान से हिफाजत की जाती है और कोई भी शख्स इससे ज़्यादा नेकियां लेकर नहीं आऐगा सिवाए उस शख्स के जिसने उस से ज़्यादा नेकियां की हों। (बुखारी, ३२९३ मुस्लिम २६९१)

عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ - رضي الله عنه - قَالَ: قَالَ لِي رسول الله ﷺ: ((يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ قَيْسٍ)) ، قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ ، قَالَ: ((أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى كَنْزٍ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ)) ، قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ ، فَدَاكَ أَبِي وَأُمِّي ، قَالَ: ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ)) [رواه البخاري ومسلم: 4205 ، 2704].

अबू मूसा अशअरी रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मझसे फरमाया ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस मैंने कहा या रसूलुल्लाह मैं हाजिर ह् आपने फरमाया क्या मैं तुमको जन्नत के खजाने में

से एक खजाना के बारे में न बताऊं मैंने कहा हां ऐ अल्लाह के रसूल बतलाइये मेरे बाप और मां आप पर कुरबान जायें आपने फरमाया जन्नत का वह खजाना *लाहौला वला कुव्वत इल्ला बिल्ल्लाह* है। (बुखारी, ४२०५ मुस्लिम २७०४)

सफों की बराबरी

सफों को बराबर करने के फवाइद और फजीलतें बहुत हैं।

१. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम पर अमल करना

فعن أبي موسى - ﷺ - قال: قال رسول الله ﷺ : ((إذا صَلَّيتُم فَأقيموا صُفُوفَكُم)) [رواه مسلم: 404]

अबू मूसा अशअरी रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब नमाज़ पढ़ने लगो तो अपनी सफों को सीधी करो। (मुस्लिम ४०४)

२. दिल और मकासिद बाहम मिल जाते हैं

عن النُّعْمَان بْن بَشِير ﷺقَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَتُسَوُّنَّ صُفُوفَكُمْ أَوْ لَيُخَالِفَنَّ اللهُ بَيْنَ وُجُوهِكُمْ) [رواه البخاري ومسلم: 717 ، 436].

नोमान बिन बशीर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम जरूर अपनी सफों को बराबर करोगे या अल्लाह तआला जरूर तुम्हारे चेहरे के दरमियान इख्तिलाफ डाल देगा। (बुखारी, ७१७ मुस्लिम ४३६)

३. सफों की बराबरी नमाज़ कायम करना कहलाता है।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه ، عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (سَوُّوا صُفُوفَكُمْ فَإِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوفِ مِنْ إِقَامَةِ الصَّلَاةِ) [رواه البخاري ومسلم: 723 ، 433].

अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो इसलिए कि सफों का दरूस्त करना नमाज़ को कायम करना है। (बुखारी, ७२३ मुस्लिम ४३३)

४. सफों की दुरूस्तगी से शैतान के लिए तंगी पैदा होती है।

عَنْ عَبْدِ الله بْنِ عُمَرَ رضي الله عنه ،أَنَّ رَسُولَ الله - ﷺ - قَالَ: ((أَقِيمُوا الصُّفُوفَ ، وَحَاذُوا بَيْنَ المَنَاكِبِ ، وَسُدُّوا الخَلَلَ ، وَلِينُوا بِأَيْدِي إِخْوَانِكُمْ ، وَلَا تَذَرُوا فُرُجَاتٍ لِلشَّيْطَانِ)) [رواه أبو داود: 666].

अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सफों को सीधा करो और कंधों को बराबर रखो और सफों के दर्मियान खला को बंद करो और अपने भाइयों के हाथों में नरम हो जाओ और शैतान के लिए दरमियान में जगह मत छोड़ो (अबू दाऊद ६६६)

५. जो सफ को मिलाएगा उसे अल्लाह मिलायेगा

عَنْ عَبْدِ الله بْنِ عُمَرَ - رضي الله عنه - قَالَ: أَنَّ رَسُولَ الله - ﷺ - قَالَ: ((... وَمَنْ وَصَلَ صَفًّا وَصَلَهُ اللهُ وَمَنْ قَطَعَ صَفًّا قَطَعَهُ اللهُ)) رواه أبو داود 666)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो सफ को मिलायेगा उसे अल्लाह मिलायेगा और जो सफों को तोडेगे अल्लाह तआला उसे तोड़ेगा। (अबू दाऊद ६६६)

नमाज़ पढ़ने की फज़ीलत

नमाज़ पढ़ने से दरजात बुलन्द होते हैं गुनाह माफ होते हैं और बाइज्जत रिज़्क नसीब होती है अल्लाह तआला का इरशाद है

﴿ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ * أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴾ [الأنفال:3-4].

जो लोग नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने उनको जो रिज़्क दिया है वह उसमें से खर्च करते हैं सच्चे ईमान वाले यही लोग हैं इनके लिए बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास मगफिरत और इज्जत की रोजी है। (अनफाल-३-४)

अल्लाह तआला ने फरमाया

﴿ وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا لا نَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَى ﴾ [طه:132].

और अपने घराने के लोगों पर नमाज़ की ताकीद रख और खुद भी इस पर जमा रह हम तुझसे रोजी नहीं मांगते बल्कि हम खुद तुझे रोज़ी देते हैं आखिर में बोल बाला परहेजगारी ही को है। (ताहा १३२)

और बुराइयों का कफ्फारा होता है और गुनाह मिटते हैं अल्लाह तआला फरमाता है

﴿ وَأَقِمِ الصَّلاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفاً مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ ﴾ [هود:114].

दिन के दोनों सिरों में नमाज़ कायम करो रात की कई घड़ियों में भी बेशक नकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं ये नसीहत है नसीहत पकड़ने वालों के लिए (हूद११४)

وعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهَرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنهُ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ ، هَل يَبْقى مِنْ دَرَنِهِ شَيئًا)) ، قَالُوا: لَا يُبْقِي مِنْ دَرَنِهِ شَيْئًا ، قَالَ: ((فَذَلِكَ مِثْلُ الصَّلَوَاتِ الخَمْسِ يَمْحُو اللهُ بِهِنَّ الخَطَايَا)) [رواه البخاري ومسلم: 528، 667].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुये सुना भला बतलाओ अगर तुम में से किसी के दरवाजे पर नहर हो जिससे वह रोजाना पांच मरतबा नहाता हो क्या उसके जिस्म पर कोई मैल कुचल बाकी रहेगा सहाबा ने अज किया उसके जिस्म पर कोई मैल बाकी नहीं रहेगा आपने फरमाया यही पांच नमाजों की मिसाल है अल्लाह तआला उनके जरिये से गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी, ५२८ मुस्लिम ६६७)

وعَنْه رضي الله عنه ، أَنَّ رَسُولَ الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ كَانَ يَقُولُ: ((الصَّلَوَاتُ الخَمْسُ ، وَالجُمْعَةُ إِلَى الجُمْعَةِ ، وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ مُكَفِّرَاتٌ لِمَا بَيْنَهُنَّ إِذَا اجْتُنِبَت الْكَبَائِرَ)) [رواه مسلم: 233]

हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया पांच नमाज़ों जुमा स दूसरे जुमा तक रमजान से दूसरे रमजान तक उन गुनाहों का कफ्फारा है जो उसके दरमियान होंगे जब तक कबीरा गुनाहों का इरतिकाब न किया जाए। (मुस्लिम २३३)

जन्नतुल फिरदोस की वरासत के जरिया इज्जत अफजाई अल्लाह तआला ने फरमाया

﴿ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ * أُولَئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ * الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴾ [المؤمنون: 9-11].

जो अपनी नमाजों की निगहबानी करते हैं यही हैं जो फिरदोस के वारिस होंगे जहां वह हमेशा रहेंगे। (अलमुमेनन ९-११)

रहमत का हुसूलः अल्लाह तआला का इरशाद है

﴿ وَأَقِيمُوا الصَّلاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴾ [النور:56]

नमाज़ की पाबन्दी करो जकात अदा करो और अल्लाह के रसूल की फरमा बरदारी में लगे रहो ताकि तम पर रहम किया जाए। (अन्नूर ५६)

नमाज़ अपने पढने वाले के लिए नूर है

عَنْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ ـ رضي الله عنه ـ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((... **وَالصَّلَاةُ نُورٌ ، وَالصَّدَقَةُ بُرْهَانٌ، وَالصَّبْرُ ضِيَاءٌ ، وَالْقُرْآنُ حُجَّةٌ لَكَ أَوْ عَلَيْكَ. كُلُّ النَّاسِ يَغْدُو فَبَائِعٌ نَفْسَهُ فَمُعْتِقُهَا ، أَوْ مُوبِقُهَا**)) الحديث. [رواه مسلم: 223].

अबू मालिक अशअरी रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत ह कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि ने फरमाया नमाज़ नूर है सदक़ा दलोल है सब्र रोशनी है कुरआन तुम्हारे लिए या तुम्हारे खिलाफ हुज्जत है हर शख्स घर से निकलता है तो अपने आपको बेच देने वाला होता है या तो उसे आजाद करने वाला होता है या वह हलाक कर देने वाला। (मुस्लिम २२३)

जमाअत के साथ नमाज पढ़ने की फज़ीलत

अल्लाह तआला का इरशाद है

﴿فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ * رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ﴾ [النور:36-37]

उन घरों में जिनके अदबो एहतराम का और अल्लाह तआला का नाम वहां लिए जाने का हुक्म है वहां सुब्हो शाम अल्लाह तआला की तसबीह बयान करते हैं ऐसे लोग जिन्हें तिजारत, हर खरीदो फरोख्त अल्लाह के जिक्र से, नमाज़ के कायम करने, जकात अदा करने से गाफिल नहीं करते उस दिन से

डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आंखें उलट पलट हो जायेंगी। (अलनूर ३६.३७)

عَنْ عَبْدِ الله بْنِ عُمَرَ رضي الله عنهما ، أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: ((صَلَاةُ الجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلَاةَ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرِينَ دَرَجَةً)) [رواه البخاري ومسلم: 645، 650]

अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जमाअत के साथ नमाज़ इनफिरादी नमाज़ पढ़ने से २७ गुना अफज़ल है। (बुखारी, ६४५ मुस्लिम ६५०)

बाज़ नमाज़ों की फजोलत

नमाज़े फज्र और अस्र

(क) दोनों नमाज़ों के वक्त दिन और रात के फरिश्ते हाज़िर होते हैं अल्लाह का इरशाद है

﴿ أَقِمِ الصَّلاةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴾ [الاسراء:78].

नमाज़ को काइम करो आफताब के चलने से लेकर रात की तारीकी तक और फज्र से लेकर रात की तारीकी तक और फज्र का कुरआन पढ़ना भी बेशक फज्र के वक्त फरिश्तों को हाजिर किया गया है। (अलइसरा ७८)

وعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ، أَنَّ رَسُولَ الله ـ ﷺ ـ قَالَ: ((يَتعَاقَبُونَ فِيكُمْ مَلَائِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلَائِكَةٌ بِالنَّهَارِ وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ وَصَلَاةِ

الْعَصْرِ ، ثُمَّ يَعْرُجُ الَّذِينَ بَاتُوا فِيكُمْ ، فَيَسْأَلُهُمُ اللهُ ـ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ ـ كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي ؟ فَيَقُولُونَ: تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ ، وَأَتَيْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ)) [رواه البخاري ومسلم: 555، 632].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम्हारे अन्दर रात को और दिन को फरिश्ते बारी बारी आते ह और सुबह और अस्र की नमाज़ में इकटठे हो जाते हैं फिर वह फरिश्ते जो तुम्हारे बीच रात गुज़ारते हैं ऊपर चढ़ जाते हैं फिर अल्लाह तआला उनसे पूछता है (हालांकि वह खूब जानता है) तुम ने मेरे बन्दों को किस हालत में छोड़ा वह कहते हैं हम उन्हें नमाज़ पढते हुए छोड़ आए हैं और हम जब उनके पास गए थे तब भी वह नमाज़ में मसरूफ थे (बुखारी, ५५५ मुस्लिम ६३२)

(ख) जन्नत में दाखिले का सबब

عَنْ أَبِي موسى رضي الله عنه ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ـ صلى الله عليه وسلم ـ قَالَ: ((مَنْ صَلَّى الْبَرْدَيْنِ دَخَلَ الجَنَّةَ)) [رواه البخاري ومسلم: 574 – 635].

अबू मूसा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो

शख्स दो ठण्डो नमाज़ें पढ़ता है वह जन्नत में जाएगा (बुखारी, ५७४ मुस्लिम ६३५)

(ग) जहन्नम से निजात का सबब

عن عُمارَةَ بْنِ رُؤَيْبَةَ - رضي الله عنه - قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ الله - صلى الله عليه وسلم - يَقُولُ: ((لَنْ يَلِجَ النَّارَ أَحَدٌ صَلَّى قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا)) [رواه مسلم: 634].

ओमारा बिन रूऐबह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि जो कोई सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले नमाज़ पढ़ता है वह हरगिज़ जहन्नम में दाखिल नहीं होगा। (मुस्लिम ६३४)

(घ) अल्लाह बन्दे की हिफाज़त करता है और वह अल्लाह की अमान में रहता है

عن جُنْدَب بْن عَبْدِ الله - رضي الله عنه - قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صلى الله عليه وسلم : ((مَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ الله ، فَلَا يَطْلُبَنَّكُمْ اللهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَيْءٍ)) [رواه مسلم:657].

जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स फज्र की नमाज़ पढता है वह अल्लाह के अमान में होता है अल्लाह तआला तुझसे अपने अमान के बारे में पूछ न ले। (मुस्लिम ६५७)

(ङ) अल्लाह तआला का दीदार नसीब होता है

عَنْ جَرِيرٍ ـ رضي الله عنه ـ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ـ صلى الله عليه وسلم ـ إِذْ نَظَرَ إِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ فقَالَ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هَذَا الْقَمَرَ لَا تُضَامُونَ فِي رُؤْيَتِهِ ، فَإِنْ اسْتَطَعْتُمْ أَلَّا تُغْلَبُوا عَلَى صَلَاةٍ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَصَلَاةٍ قَبْلَ غُرُوبِهَا فَافْعَلُوا)) [رواه البخاري ومسلم: 7434 – 633].

जरीर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह कहते हैं कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे चांद की चौदहवीं रात थी कि आपने चांद की तरफ देखा और फरमाया बेशक तुम अपने रब को एसे ही देखोगे जिस तरह तुम सब इस चांद को देख रहे हो तुम इसके देखने में कोई मशगूल महसूस नहीं करते अगर तुम इस बात की ताकत रखो कि सूर्य निकलने से पहले की नमाज़ और सूर्य डूबने से पहले की नमाज़ में तुम मशगूल न हो तो तुम ज़रूर ऐसा करो। (बुखारी, ७४३४ मुस्लिम ६३३)

इशा और फज्र की नमाज़ों की फज़ीलत

عن عُثمانَ ـ رضي الله عنه ـ قال: سَمِعْتُ رَسُولَ الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ يَقُولُ: ((مَنْ صَلَّى الْعِشَاءَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ ، وَمَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا صَلَّى اللَّيْلَ كُلَّهُ)) [رواه مسلم: 656]

उस्मान रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मैने फरमाते हुये सुना

कि जिसने इशा की नमाज़ जमाअत से पढ़ी तो वह गोया आधी रात तक नफिल पढ़ता रहा जिसने फज्र की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी गोया वह सारी रात नमाज़ पढ़ता रहा। (मुस्लिम ६५६)

नमाज़ में खुशअ की फज़ीलत

(क) कामयाबी और आला जन्नतुल फिरदौस का हुसूल

अल्लाह तआला का इर्शाद है

قَالَ اللهُ تعَالَى: ﴿ قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ * الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ * وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴾ إلى قَوْلِه تَعَالَى: ﴿ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴾ [المؤمنون:1-11].

बेशक ईमान वालों ने कामयाबी हासिल करली जो अपनी नमाज़ में खुश्अ अख्तयार करत है जो लग्व बात से मुंह मोड़ लेते हैं यही लोग फिरदोस के वारिस होंगे जहां वह हमशा रहेंगे। (अलमुमिनून १-११)

(ख) नमाज़ के सवाब में इज़ाफा

عن عمار بن ياسر ﷺ قال: سَمِعْتُ رَسُولَ الله ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْعَبْدَ لَيُصَلِّي الصَّلَاةَ مَا يُكْتَبُ لَهُ مِنْهَا إِلَّا عُشْرُهَا ، تُسْعُهَا ، ثُمُنُهَا ، سُبُعُهَا ، سُدُسُهَا ، خُمُسُهَا ، رُبُعُهَا ، ثُلُثُهَا ، نِصْفُهَا)) [رواه أحمد في مسنده: 4/ 321].

अम्मार बिन यासिर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह कहते हैं मैंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ये फरमाते हुये सुना बेशक जो बन्दा नमाज पढ़ता है तो इसके लिए दस गुना नौ गुना आठ गुना सात गुना छ गुना पांच गना चार गुना तीन गुना दो गुना सवाब लिखा जाता है। (मुसनद अहमद ४, ३२१)

(ग) गुनाहों की मगफिरत और बड़े अज्र का हुसूल

अल्लाह तआला का इरशाद है

﴿إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا﴾ .[الأحزاب:35]

बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें मोमिन मर्द और मोमिन औरतें फरमाबरदारी करने वाले मर्द और फरमाबरदारी करने वाली औरतें सच्चे मर्द और सच्ची औरतें सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें खुशुअ करने वाले मर्द और खुशुअ करने वाली औरतें खैरात करने वाले मर्द और खैरात करने वाली औरतें रोजे रखने वाले मर्द और रोज रखने वाली औरतें पाकदामन मर्द और पाक दामन औरतें कसरत से अल्लाह का जिक्र करने वाले मर्द और जिक्र करने

वाली औरतें उन सबके लिए अल्लाह तआला ने मगफिरत और बड़ा सवाब तैयार कर रखा है (अल अहज़ाब ३५)

तकबीरे तहरीमा के बाद की दुआ आसमान के दरवाजों को खोलती है

عَنْ ابْنِ عُمَرَ - رضي الله عنهما - قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ نُصَلِّي مَعَ رَسُولِ الله ﷺ ، إِذْ قَالَ رَجُلٌ مِنْ الْقَوْمِ: اللهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا ، وَالْحَمْدُ لله كَثِيرًا ، وَسُبْحَانَ الله بُكْرَةً وَأَصِيلًا .فَقَالَ رَسُولُ الله ﷺ : ((**مَنْ الْقَائِلُ كَلِمَةَ كَذَا وَكَذَا**)) قَالَ رَجُلٌ مِنْ الْقَوْمِ: أَنَا يَا رَسُولَ الله ، قَالَ: ((**عَجِبْتُ لَهَا فُتِحَتْ لَهَا أَبْوَابُ السَّمَاءِ**)) قَالَ ابْنُ عُمَرَ: فَمَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ سَمِعْتُ رَسُولَ الله - ﷺ - يَقُولُ ذَلِكَ. [رواه مسلم: 601].

इबन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि अचानक एक आदमी ने कहा अल्लाहु अकबर कबीरा वलहम्दु लिल्लाहि कसीरा वसुबहानल्लाहि बुकरतव्वअसीला

रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसने यह कलमे कहे तो कौम में से एक शख्स ने अज किया मैंने कहा या रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो आपने फरमाया मुझे तअज्जुब हुआ जब उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोले गये। इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया कि जबसे ये बात मैने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुनी मैंन इन कलमात को कभी नही छोड़ा। (मुस्मिल ६०१)

सुरह फातिहा की तिलावत

यह कुरआन की सबसे अजीम सूरह है

عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ الْمُعَلَّى ـ رضي الله عنه ـ قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي فِي الْمَسْجِدِ ، فَدَعَانِي رَسُولُ اللهِ ﷺ فَلَمْ أُجِبْهُ ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي ، فَقَالَ: ((أَلَمْ يَقُلْ اللهُ : ﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا للهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ﴾ ثُمَّ قَالَ لِي: ((لَأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ السُّوَرِ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ تَخْرُجَ مِنَ الْمَسْجِدِ)) ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي ، فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ قُلْتُ لَهُ أَلَمْ تَقُلْ لَأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ؟ قَالَ: ﴿ الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴾ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُوتِيتُهُ)) [رواه البخاري: 4474].

हज़रत अबू सईद बिन अल मुअल्ला से रिवायत है कि वह कहते हैं कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे आवाज़ दी लेकिन मैं आपकी आवाज़ का जवाब नहीं दे सका उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं नमाज़ पढ़ रहा था आपने फरमाया क्या तूने अल्लाह का इरशाद नहीं सुना, कि ऐ इमान वालो अल्लाह और उसके रसूल की पुकार पर लब्बेक कहो जब वह तुमको पुकारें इसलिए कि इस पुकार में तुम्हारी जिन्दगी का राज पोशोदा है फिर आपने मुझसे फरमाया मै तुम को मस्जिद

से निकलने से पहले एक सूरह सिखाऊंगा जो कि कुरआन की अजीम तरीन सूरह है आपने मेरा हाथ पकड़ लिया जब आपने मस्जिद से निकलना चाहा तो मैंने आपसे कहा आप ने फरमाया कि मैं तुमको कुरआन की अजीम तरीन सूरह सिखालाऊंगा, आपने कहा वह है अल्हम्दु लिल्लाहि रब-बिल आलमीन यह सबए मसानी सात दुहरानी वाली और कुरआन अजीम है जो मुझे अता हुई है। (बुखारी, ४४७४)

सना और दुआ

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قال: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((قَالَ اللهُ تَعَالَى: قَسَمْتُ الصَّلَاةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي نِصْفَيْنِ وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ ، فَإِذَا قَالَ الْعَبْدُ: ﴿ الْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴾ ، قَالَ اللهُ تَعَالَى: حَمِدَنِي عَبْدِي ، وَإِذَا قَالَ: ﴿ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴾ ، قَالَ اللهُ تَعَالَى: أَثْنَى عَلَيَّ عَبْدِي ، وَإِذَا قَالَ: ﴿ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ﴾ ، قَالَ: مَجَّدَنِي عَبْدِي ، فَإِذَا قَالَ: ﴿ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴾ ، قَالَ: هَذَا بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ ، فَإِذَا قَالَ: ﴿ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ * صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ﴾ ، قَالَ: هَذَا لِعَبْدِي وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ)) [رواه مسلم: 395].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह फरमाते हैं कि मैंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि अल्लाह तबारक व तआला ने फरमाया कि मैनें सूरह फातिहा अपने और अपने बन्दे के दरमियान आधी आधी

तकसीम कर दी है आधी मेरी है और आधी मेरे बन्दे की है और मेरा बन्दा जो मांगे सब उसके लिए है रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब बन्दा अल्हम्दु लिल्लाहि रब-बिल आलमीन कहता है तो अल्लाह तआला कहता है मेरे बन्दे ने मेरी हम्द की और जब बन्दा अर्रहमानिरहीम कहता है तो अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ की और जब मालिको यौमिद-दीन कहता है तो अल्लाह तआला कहता है मेरे बन्द ने मेरी बड़ाई बयान की और जब बन्दा इय्याका नअबुदू व इय्याका नस्तईन कहता है तो अल्लाह तआला कहता है कि मेरे और मेरे बन्द के दरमियान मुशतरक है और जो वह मांगे वह मेरे बन्दे के लिए है और जब बन्दा इहदिनस्सीरातल मुस्तकीम, सिरातल्लजीन अनअम्त अलैहिम, गैरिल मगजूबि अलैहिम वलज्जाल्लीन, तक पढ़ता है: तो अल्लाह तआला कहता है कि ये सारी चीज़ मेरे बन्दे की है और जो कुछ वह मांग ल वह सब मेरे बन्दे के लिए है (मुस्लिम ३९५)

आमीन और गुनाहों की मगफिरत

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه ، أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الْإِمَامُ: غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ فَقُولُوا: آمِينَ ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)) [البخاري: 782]

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इमाम गैरिल मगजूबि अलैहिम वलज्जाल्लीन कहे तो आमीन कहो इसलिए

कि जिसकी आमीन फरिश्तों के आमीन से मिल जाये तो उसके गुजिश्ता गुनाह बख्श दिये जाते हैं। (बुखारी ७८२)

وعَنْهُ ﷺ ، أَنَّ رَسُولَ الله -- ﷺ -- قَالَ: ((إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ آمِينَ وَقَالَتْ المَلَائِكَةُ فِي السَّمَاءِ آمِينَ فَوَافَقَتْ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)) [البخاري ومسلم: 781، 410]

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम में से कोई आमीन कहता है तो आसमान के फरिश्ते आमीन कहते हैं और इस तरह दोनों की आमीन एक दूसरे से मिल जाती है चूनानचे उसके गुजिश्ता गुनाहा बख्श दिये जाते हैं। (बुखारी, ७८१ मुस्लिम ४१०)

रूकू करने की फज़ीलत

عَنِ ابْنِ عُمَرَ - رَضِيَّ اللهُ عَنْهُما - قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ - ﷺ - يَقُولُ: ((إِنَّ العَبْدَ إِذَا قَامَ يُصَلِّي أُتِيَ بِذُنُوبِهِ فَوُضِعَتْ عَلى رَأْسِهِ ، أَو عَاتِقِهِ فكُلَّما رَكَعَ أَو سَجَدَ تَسَاقَطَت عَنه)) [رواه ابن حبان: 5/ 26].

इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है वह कहते हैं मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ये कहते हुए सुना बेशक बन्दा जब नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा होता है तो उसके गुनाह लाए जाते हैं और उन्हें उसके सर पर या कंधे

पर रख दिये जाते है जैसे जैसे वह रूकू और सजदा करता जाता है उसके गुनाह मिटते जाते हैं। (इब्ने हिब्बान ५, २६)

रूकूअ से उठने के बाद का जिक्र (दुआ)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ـ ﷺ ـ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الْإِمَامُ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ. فَقُولُوا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الحَمْدُ ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ المَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)) [رواه البخاري ومسلم: 796 ، 409].

وفي رواية: ((فَقُولُوا رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ))

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब इमाम समीअल्लाह लिमन हमिदा कहे तो कहो ‘‘अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द’’ इसलिए कि जिसकी बात फरिश्तों की बात से मिल जाती है तो उसके गुजिश्ता छोटे गुनाह माफ हो जाते हैं। (बुखारी, ७९६ मुस्लिम ४०९)

एक दूसरी रिवायत में है कि रब्बना व लकल हम्द कहो

وعَنْ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ الزُّرَقِيِّ ـ ﷺ ـ قَالَ: (كُنَّا يَوْمًا نُصَلِّي وَرَاءَ النَّبِيِّ ـ ﷺ ـ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنْ الرَّكْعَةِ قَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ)) قَالَ رَجُلٌ وَرَاءَهُ: رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ ، حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ. فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: ((مَنْ المُتَكَلِّمُ)) قَالَ: أَنَا قَالَ: ((رَأَيْتُ بِضْعَةً وَثَلَاثِينَ مَلَكًا يَبْتَدِرُونَهَا أَيُّهُمْ يَكْتُبُهَا أَوَّلُ))[رواه البخاري:799].

रिफाआ बिन राफे अजजुरकी रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह कहते हैं कि हम एक रोज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे जब आपने रूकूअ से अपना सर उठाया तो फरमाया ''समीअल्लाह लिमन हमिदा, मुकतदियों में से किसी ने कहा ''रब्बना व लकल हम्द हम्दन कसीरन तैय्यिबन मुबारकन फीह'' जब आप नमाज़ से फारिग हुए तो दरयाफ्त फरमाया ये कलिमात कहने वाला कौन था उस आदमी ने कहा मैं, आपने फरमाया मैंने देखा कि ३० से कुछ ज्यादा फरिश्ते जल्द बाजी कर रहे थे कि कौन सबसे पहले लिखे। (बुखारी ७९९)

सजदा,

(क) कामयाबी का हुसूल और ये कामियाबी जन्नत हासिल करना है अल्लाह तआला का इरशाद है

قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴾ [الحج: 77].

ऐ इमान वाला रूकूअ् करा। और सजदा करो और अपने रब की इबादत करो और नेकी का काम करो ताकि फलाह पाओ (अलहज ७७)

(ख) अल्लाह के फज्ल उसकी रजा क्यामत के दिन का नूर और हुसूल। अल्लाह तआला का इरशाद है

قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللهِ وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ...الآية ﴾ [الفتح:29] .

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल है और जो लोग उनके साथ हैं काफिरों पर सख्त हैं और आपस में रहम दिल हैं तू उन्हें देखेगा कि रूकूअ और सजदे कर रहे हैं अल्लाह तआला का फज्ल और रजामंदी की जुस्तजू में है उनका निशान उनके चेहरों पर सजदों के असर से है"। (अलफतह २६)

(ग) दरजात बलन्द होते हैं और गुनाह मिटते हैं

عن ثوبان ﷺ قال: قال رَسُولَ الله ﷺ: ((عَلَيْكَ بِكَثْرَةِ السُّجُودِ للهِ فَإِنَّكَ لَا تَسْجُدُ للهِ سَجْدَةً إِلَّا رَفَعَكَ اللهُ بِهَا دَرَجَةً وَحَطَّ عَنْكَ بِهَا خَطِيئَةً)) [رواه مسلم: 488].

सौबान रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह के लिए ज्यादा से ज्यादा सजदे किया करो इसलिए कि तुम अल्लाह तआला के लिए एक सजदा करते हो तो अल्लाह तआला उस एक सजदा से तेरा दरजा बलन्द करता है और तेरा गुनाह मिटाता है। (मुस्लिम ४८८)

(घ) सजदा करने से रसूल की सोहबत नसीब होगी,

عن رَبِيعَةِ بْنُ كَعْبٍ الْأَسْلَمِيُّ - رضي الله عنه - قَالَ: كُنْتُ أَبِيتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ - صلى الله عليه وسلم - فَأَتَيْتُهُ بِوَضُوئِهِ وَحَاجَتِهِ ، فَقَالَ لِي: ((سَلْ)) فَقُلْتُ: أَسْأَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ ، قَالَ: ((أَوَ غَيْرَ ذَلِكَ)) قُلْتُ: هُوَ ذَاكَ ، قَالَ : ((فَأَعِنِّي عَلَى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُودِ)) [رواه مسلم: 489]

रबीआ बिन काअब अल असलमी से रिवायत है कि मैं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रात गुजारता था मैं उनके वुजू का पानी और उनकी जरूरत की चीज़ देकर हाजिर हुआ आपने मुझसे फरमायाः मांगो मैंने कहा मैं जन्नत में आप की सोहबत का तलबगार हूं आपने फरमाया उसके अलावा कुछ और मांगो मैंने कहा बस वही, तो आपने फरमाया ज्यादा से ज्यादा सजदे के जरिया मेरी मदद करो। (मुस्लिम ४८९)

(ङ) सजदे से गुनाह झड़ते हैं

عَنْ اِبْنِ عُمَرَ - رضي الله عنهما - قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُوْلُ: ((إِنَّ العَبْدَ إِذَا قَامَ يُصَلِّي أُتِيَ بِذُنُوبِهِ فَوُضِعَتْ عَلى رَأسِهِ ، أَو عَاتِقِهِ فكُلَّما رَكَعَ أَو سَجَدَ تَسَاقَطَت عَنْهُ)) [رواه ابن حبان: 5/ 26].

इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि वह कहते हैं कि मैंने रसूल को ये फरमाते हुए सुना कि जब बन्दा नमाज़ पढ़ने के लिये खड़ा होता है तो उसके गुनाहों को लाया जाता है और उसे उसके सर पर रख दिया जाता है या उसके कंधे पर रख दिया जाता है जैसे जैसे वह रूकूअ या सजदा करता हैं तो उसके गुनाह मिटते जाते हैं। (इब्ने हिब्बान ५, २६)

(च) सजदा दुआ की कुबूलियत की जगह है

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ - ﷺ - قَالَ: ((أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ)) [رواه مسلم: 482].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बन्दा जब सजदे में होता है तो अपने रब से बहुत करीब होता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा सजदे में दुआ करो। (मुस्लिम ४८२)

عن ابن عباس - ﷺ - قال: قال رسول الله ﷺ: ((... وَأَمَّا السُّجُودُ فَاجْتَهِدُوا فِي الدُّعَاءِ فَقَمِنٌ أَنْ يُسْتَجَابَ لَكُمْ)) [رواه مسلم: 479].

इब्न अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सजदे में खूब दुआ करो इसलिए कि सजदे में दुआ करना तुम्हारी दुआ की कुबूलियत के लिए मुनासिब है (मुस्लिम ४७६)

(छ) सजदे के हिस्सों को आग नहीं जलायेगी

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ - ﷺ - قَالَ: ((إِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ أَنْ تَأْكُلَ أَثَرَ السُّجُودِ)) [رواه البخاري ومسلم: 806 ، 182].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला आगके ऊपर हराम कर दिया है कि वह सजदे के निशान को जलाए।(बुखारी, ८०६ मुस्लिम १८२)

पहला तशहहूद

तशहहुद करने से आसमान और जमीन में अल्लाह के बन्दों के बकद्र सवाब हासिल होता है

عَنْ عَبدالله بنِ مَسْعُودٍ رضي الله عنه قَالَ كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ قُلْنَا: السَّلَامُ عَلَى الله قبل عباده ، السَّلَامُ عَلَى جِبْرِيلَ ، السَّلَامُ عَلَى مِيكَائِيلَ ، السَّلَامُ عَلَى فُلَانٍ وَفُلَانٍ) . فَلَمَّا انْصَرَفَ النَّبِي ﷺ أَقْبَلَ عَلينا بِوَجْهِهِ فَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ هُوَ السَّلَامُ ، فَإِذَا جَلَسَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلَاةِ فَلْيَقُلْ: التَّحِيَّاتُ للهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ ـ فَإِنَّهُ إِذَا قَالَ ذَلِكَ أَصَابَ كُلَّ عَبْدٍ اللهِ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ [متفق عليه: 6230-402].

अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कहते ह कि जब हम रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज पढ़ लेने के बाद हमने कहा सलाम हो अल्लाह पर सलाम हो जिब्रईल पर सलाम हो मीकाईल पर सलाम हो फलां फलां पर जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ से फारिग हुए तो हमारी तरफ मुतवज्जह हुए और फरमाया अल्लाह तआला का नाम सलाम है इसलिए तुम लोग तशहहुद

में ये दुआ पढ़ो। अत्तहिय्यातु लिल्लाहि, वस्सलवातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यू व रहमतुल्लाहि वबरकातुहू, अस्सलामु अलैना वअला इबादिल्ला हिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुह, (बुखारी, ६२३० मुस्लिम ४०२)

आखिरी तशहहुद में नबी सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजना

(क) इसमें अल्लाह के हुक्म की अताअत और फरिश्तों की इकतदा है अल्लाह तआला का इरशाद है

﴿ إِنَّ اللهَ وَمَلائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴾ [الأحزاب:56].

बेशक अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं ऐ ईमान वाला तुम भी दरूद व सलाम भेजो। (अल अहज़ाब ५०)

(ख) सवाब में दस गुना तक इज़ाफा होता है

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ـ صلى الله عليه وسلم ـ قَالَ: ((مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ عَشْرًا)) [رواه مسلم: 408].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो कोई मुझ पर एक

मरतबा दरूद भेजता है अल्लाह तआला उस पर दस मरतबा दरूद भेजता है। (मुस्लिम ४०८)

स्लाम फेरने से पहले की दुआ

عَنْ عَبْدِ الله بن مسعود ﷺ ، أَنَّ النَّبي ـ ﷺ ـ قَالَ: ((إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: التَّحِيَّاتُ لله ... ثُمَّ لْيَتَخَيَّرْ بَعْدُ مِنَ المَسْأَلَةِ مَا شَاءَ)) الحديث. [متفق عليه: 6230-402].

अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़े तो उसे कहना चाहिये अत्तहिय्यातु लिल्लाहि...इसके बाद नमाज़ी जो जी चाहे दुआ करे। (बुखारी, ६२३० मुस्लिम ४०२)

नमाज़ के बाद की दुआएं और काम

(क) अजकार से गुनाहों की मगफिरत होती है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ ،عَنْ رَسُولِ الله ـ ﷺ ـ قال: ((مَنْ سَبَّحَ اللهَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاةٍ ثَلاثًا وَثَلاثِينَ ، وَحَمِدَ اللهَ ثَلاثًا وَثَلاثِينَ ، وَكَبَّرَ اللهَ ثَلاثًا وَثَلاثِينَ ، فَتْلِكَ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ ، وَقَالَ تَمَامَ المِئَةِ : لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ المُلْكُ ، وَلَهُ الحَمْدُ ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ، غُفِرَتْ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ)) [رواه مسلم: 597].

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने नमाज़ के बाद ३३ बार सुब्हानल्लाह ३३ बार अल्हम्दुलिल्लाह और ३३ बार अल्लाह अकबर कहा तो ये ९९ हो गये, अब सौ पुरा करते

हुए कहा लाइलाह इल्लल्लाह, वहदहू ला शरीका-लहू लहुल मुल्कु व लहुल हमदु वहुव अला कुल्लि शैइन कदीर
तो उसके गुनाह बख्श दिये जाते हैं अगरचे वह समुन्दर के झाग के बराबर ही क्यों न हो। (मुस्लिम ५९७)
(ख) अल्लाह तआला की तरफ से दरजात की फजीलत और नेमतों का हुसूल और जन्नत में दाखिला नसीब होता है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﵁ ، قال: قَالُوا: يَا رَسُولَ الله ، ذَهَبَ أَهْلُ الدُّثُورِ بِالدَّرَجَاتِ وَالنَّعِيمِ الْمُقِيمِ . قَالَ: ((كَيْفَ ذَاكَ ؟)) ، قَالُوا: صَلَّوْا كَمَا صَلَّيْنَا ، وَجَاهَدُوا كَمَا جَاهَدْنَا ، وَأَنْفَقُوا مِنْ فُضُولِ أَمْوَالِهِمْ ، وَلَيْسَتْ لَنَا أَمْوَالٌ. قَالَ : ((أَفَلَا أُخْبِرُكُمْ بِأَمْرٍ تُدْرِكُونَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ ، وَتَسْبِقُونَ مَنْ جَاءَ بَعْدَكُمْ ، وَلَا يَأْتِي أَحَدٌ بِمِثْلِ مَا جِئْتُمْ بِهِ ، إِلَّا مَنْ جَاءَ بِمِثْلِهِ: تُسَبِّحُونَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا ، وَتَحْمَدُونَ عَشْرًا ، وَتُكَبِّرُونَ عَشْرًا)) [رواه البخاري: 6329].

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि गरीब लोगों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मालदार लोग ऊंचे दरजात पर पहुंच गये और हमशा की नेमतें लूट लीं आपने फरमाया वह कैसे? उन्हों ने कहा वह नमाज़ पढ़ते हैं जैसे हम नमाज़ पढ़ते हैं वह जिहाद करते हैं जैसे हम जिहाद करते हैं और वह सदका देत हें और हम सदका नहीं दे सकते (माल न होन को वजह से) तो आपने फरमया कि मैं तुम्हें

एक ऐसी चीज ना सिखाऊं कि जो तुमसे आगे हैं तुम उनको पा लो और अपने से पीछे वालों से हमशा आगे रहो ताकि तुम से कोई दरजा में बढ़कर न हो मगर वही काम कर जो तुम करते हो सहाबा ने अज किया हां ऐ अल्लाह के रसूल आपने फरमया हर नमाज के बाद १० मरतबा सुब्हानल्लाह १० मरताबा अल्हम्दुलिल्लाह १० बार अल्लाह अकबर कहो। (बुखारी ६३२९)

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رضيَ اللهُ عَنهما ، عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَصْلَتَانِ ، أَوْ خَلَّتَانِ لَا يُحَافِظُ عَلَيْهِمَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ ، هُمَا يَسِيرٌ ، وَمَنْ يَعْمَلُ بِهِمَا قَلِيلٌ: يُسَبِّحُ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا ، وَيَحْمَدُ عَشْرًا ، وَيُكَبِّرُ عَشْرًا ، فَذَلِكَ خَمْسُونَ وَمِئَةٌ بِاللِّسَانِ ، وَأَلْفٌ وَخَمْسُ مِئَةٍ فِي الْمِيزَانِ ، وَيُكَبِّرُ أَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ ، وَيَحْمَدُ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ ، وَيُسَبِّحُ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ ، فَذَلِكَ مِئَةٌ بِاللِّسَانِ ، وَأَلْفٌ فِي الْمِيزَانِ)) [رواه أبوداود: 5065 ، والترمذي: 3410 ، والنسائي: 1347 ، وابن ماجة: 926].

अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दो खसलतें ऐसी हैं जिन पर हमेशगी बरतने वाला मुस्लिम बन्दा जन्नत में जाएगा वह दानों आसान हैं और जो उस पर अमल कर वह कम है, यानी हर नमाज़ के बाद १० बार सुब्हानल्लाह कहे १० बार अल्हम्दुलिल्लाह कहे १० बार अल्लाह अकबर कहे इस तरह जुबान पर १५० हो गये और एक हजार पांच सौ मोजान में हो गये और जब सोने लगे तो ३४ बार

अल्लाह अकबर कहे और ३३ बार अल्हम्दुलिल्लाह कहे और ३३ बार सुब्हानल्लाह कहे इस तरह जुबान पर १०० कलमे होंगे और तराजू में हजार कलमे हो गय। (अबू दाऊद ५०६५ तिमिज़ी ३४१० नसई, १३४७ इब्ने माजा ६२६)

तमाम तारीफ अल्लाह तआला के लिए है जिसकी नेमतों से नेक काम पूरे होते हैं।